INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VIII	Department: Hindi (2nd Lang)	14.11.25
Question Bank	Topic: सुदामा चरित -	Note: Pls. write in your Hindi note book

प्रश्न अभ्यास

अति लघु प्रश्न

प्र.1-सुदामा द्वारपाल से क्या पूछ रहे थे?

उत्तर-सुदामा द्वारपाल से श्रीकृष्ण के महल के विषय में पूछ रहे थे ।

प्र.2-सुदामा के पाँवों में क्या लगे थे?

उत्तर-सुदामा के पाँवों में काँटे लगे थे ।

प्र.3-गुरुमाता ने सुदामा को बचपन में खाने को क्या दिया था?

उत्तर-गुरुमाता ने सुदामा को बचपन में खाने को चने दिए थे ।

प्र.4-सुदामा अपने गाँव आकर क्या खोज नहीं पाए?

उत्तर-सुदामा अपने गाँव आकर अपनी झोंपड़ी खोज नहीं पाए।

प्र.5-सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण को भेंट स्वरूप क्या भेजा था?

उत्तर-सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण को भेंट स्वरूप चावल भेजे थे ।

लघु प्रश्न

प्र.1 – अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या-क्या विचार आए? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – द्वारका से लौटकर सुदामा जब अपने गाँव वापस आए तो अपनी झोंपड़ी के स्थान पर बड़े-बड़े भव्य महलों को देखकर सबसे पहले तो उनका मन भ्रमित हो गया कि कहीं वे घूम फिर कर वापस द्वारका ही तो नहीं चले आए। फिर सबसे पूछते फिरते हैं तथा अपनी झोपड़ी को ढूँढने लगते हैं।

प्र.2– "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"-इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण के लिए भेंट स्वरूप कुछ चावल भेजे थे। संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को यह भेंट नहीं दे पा रहे हैं। क्योंकि कृष्ण अब द्वारिका के राजा हैं और उनके पास सब सुख-सुविधाएँ हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो।

प्र.3 – सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर – सुदामा की हालत देखकर श्रीकृष्ण को बहुत दुख हुआ। दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले कि उन्हीं आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

प्र.4 – "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर – प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि श्रीकृष्ण ने अपने बालसखा सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मँगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर उनको इतना कष्ट हुआ कि उनके आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए। अर्थात् परात में लाया गया जल व्यर्थ हो गया।

दीर्घ प्रश्न

प्र.1– निर्धनता के बाद मिलने वाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर – निर्धनता के बाद श्रीकृष्ण की कृपा से सुदामा को धन-सम्पदा मिलती है। जहाँ सुदामा की टूटी-फूटी सी झोंपड़ी हुआ करती थी, वहाँ अब स्वर्ण भवन शोभित है। कहाँ पहले पैरों में पहनने के लिए जूते तक नहीं थे और अब पैरों से चलने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि अब घूमने के लिए हाथी-घोड़े हैं, पहले सोने के लिए केवल यह कठोर भूमि थी और आज कोमल सेज पर नींद नहीं आती है, कहाँ पहले खाने के लिए चावल भी नहीं मिलते थे और आज प्रभु की कृपा से खाने को किशमिश-मुनक्का भी उपलब्ध हैं। परन्तु वे अच्छे नहीं लगते।

प्र.2 – द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे? सुदामा के मन की दुविधा को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।

उत्तर – द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा का मन बहुत दुखी था। वे कृष्ण द्वारा अपने प्रति किए गए व्यवहार के बारे में सोच रहे थे| वे कृष्ण के व्यवहार से खीझ रहे थे क्योंकि केवल आदर-सत्कार करके ही श्रीकृष्ण ने सुदामा को खाली हाथ भेज दिया था। वे तो कृष्ण के पास जाना ही नहीं चाहते थे। परन्तु उनकी पत्नी ने उन्हें जबरदस्ती मदद पाने के लिए कृष्ण के पास भेजा। उन्हें इस बात का पछतावा भी हो रहा था कि माँगे हुए चावल जो कृष्ण को देने के लिए भेंट स्वरूप लाए थे, वे भी हाथ से निकल गए और कृष्ण ने उन्हें कुछ भी नहीं दिया।

==